UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 26 कुंवर सिंह (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

1857 के स्वाधीनता संग्राम में कुंवर सिंह ने अँग्रेजों के विरुद्ध बिहार के क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया। दानापुर के क्रांतिकारियों ने 25 जुलाई, 1857 ई० को अँग्रेजों को हराकर आरा पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

कुँवर सिंह बिहार स्थित जगदीशपुर के जमींदार थे। ये मालवा के शासक भोज के वंशज थे। स्वाधीनता संग्राम के समय वे अस्सी वर्ष के थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने गलत नीति से इनकी जागीर । छीन ली थी। सीमित साधन होते हुए भी इन्होंने क्रान्तिकारियों को संगठित किया। छापामार युद्धनीति अपनाकर इन्होंने अंग्रेजों को बार-बार हराया। ये युद्ध अभियान में बाँदा, रीवाँ और कानपुर भी गए। कुछ देशी राजाओं ने अँग्रेजों का साथ दिया। एक निश्चित तिथि को युद्ध न होने से अँग्रेजों को दमन करने का मौका मिल गया। विषम स्थिति को देखते हुए भी कुँवर सिंह ने अदम्य शौर्य प्रदर्शित कर अँग्रेजों से लोहा लिया। कुँवर सिंह की समय-समय पर भिन्न-भिन्न रणनीति का अँग्रेज अनुमान नहीं लगा पा रहे थे।

आजमगढ़ से पच्चीस मील दूर अतरौलिया के मैदान से पीछे हटकर सोची-समझी रणनीति के अनुसार अँग्रेजों की सेना को जीत का आभास दिलाया। फिर बगीचे में आराम और भोजन करती अँग्रेजी सेना पर अचानक जोरदार हमला किया। बड़ी संख्या में अँग्रेज सैनिक मरे और उनके शस्त्र भी छिने। पराजय होने के बाद अँग्रेजी सेना ने कुंवर सिंह को समाप्त करने का निश्चय करके आक्रमण किया। कुंवर सिंह के सैनिक अनेक दलों में बँटकर भिन्न दिशाओं में भागे। अँग्रेजी सैनिक संशय में पड़ गए। कुछ जंगलों में फँसे, भटके और बड़ी संख्या में मारे गए। इस प्रकार सोची-समझी रणनीति से कुँवर सिंह ने कई बार अँग्रेज सैनिकों को छकाया।

एक बार बलिया के पास रात में किश्तियों से गंगा नदी पार करते समय कुँवर सिंह की बाँह में अँग्रेजी की गोली से घाव हो गया और अधिक खून बहने से स्वास्थ्य बिगड़ गया। कुछ दिनों के बाद इस वीर और महान देशभक्त का निधन हो गया।

https://www.evidyarthi.in/